E-Learning Study Material
By-Prof (Dr) YADWENDRA SINGH
Subject- Economics
MAHARAJA COLLEGE, ARA
V.K.S. UNIVERSITY, ARA, BIHAR
B.A. Economic Hons First Year

Q :- व्यष्टि अर्थशास्त्र (micro economics) तथा समष्टि अर्थशास्त्र (macro economics) में अन्तर स्पष्ट कीजिए तथा इनकी पारस्परिक निर्भरता को समझाइए।

Differentiate between micro and macro economics and also mention about their interdependence.

Scanned with CamScanner

Micro and Macro Economics are the two sides of the same coin. There is a close interdepence between the two. The theories regarding the behaviour of some macroeconomic aggregates (but not all) are derived from theories of individual behaviour ~~of some~~ .... Similarly, the theory of aggregate Consumption Function is based upon the behaviour patterns of individual Consummers.

वस्तुतः सूक्ष्म तथा व्यापक अर्थशास्त्र आर्थिक विश्लेषण के दो अलग अलग तरीके हैं। ये दोनों आपस में प्रतियोगी न होकर पूरक हैं। इन दोनों प्रणालियों में से कोई एक प्रणाली अपने आप में पूर्ण नहीं है। प्रत्येक प्रणाली के अपने अपने दोष व सीमाएँ हैं। एक प्रणाली की सीमाएँ एवं दोष दूसरी प्रणाली के द्वारा दूर कर लिए जाते हैं। इसलिए ये प्रणालियां आपस में एक दूसरे की पूरक कही जाती हैं। इस कथन को निम्न बिन्दुओं में व्यक्त किया गया है—

(A) व्यापक आर्थिक विश्लेषण में सूक्ष्म आर्थिक विश्लेषण की आवश्यकता निम्न है:-

(i) सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था को समझने तथा उसके सम्बन्ध में नीतियों का निर्धारण करने के लिए

हम व्यक्तिगत इकाइयों के संयोगों का अध्ययन करते हैं। जब तक व्यक्तिगत इकाइयों की सही सही जानकारी नहीं हो जाती तब तक व्यापक आर्थिक निष्कर्ष सही नहीं हो सकते।

(ii) अर्थव्यवस्था की सामान्य प्रकृति की सही सही जानकारी तभी की जा सकती है जबकि हमें उन बातों या सिद्धान्तों का ज्ञान हो जो कि व्यक्तियों परिवारों और फर्मों के व्यवहार पर प्रभाव डालते हैं। प्रो० सेम्युलसन के अनुसार - "वास्तव में सूक्ष्म और व्यापक अर्थशास्त्र परस्पर कोई विरोध नहीं है। ये दोनों अत्यन्त आवश्यक है। यदि आप एक को समझते और दूसरे के बारे में अनभिज्ञ या अनजान हैं तो आप केवल अर्द्धशिक्षित ही हैं।

(iii) यदि समाज द्वारा वस्तुओं की माँग बढ़ायी जा रही है तो सामान्यतया यह कहा जायगा कि फर्में उत्पादन (production) बढ़ायेंगी परन्तु जिन फर्मों की उत्पादन लागत बढ़ रही होगी उन फर्मों के लिए ऊँची कीमतों पर भी उत्पादन को बढ़ाना आसान नहीं होगा इसी प्रकार आय के बढ़ जाने से कुछ वस्तुओं की माँग बढ़ती है तो कुछ की माँग घट भी सकती है माना कम आय स्तर पर लोग साइकिल की माँग करते थे परन्तु अब आय के बढ़ जाने से साइकिल की अपेक्षा स्कूटर की माँग में वृद्धि हो जायेगी फलतः साइकिल के कलकारखानों में उत्पादन घटेगा जबकि स्कूटर के कलकारखानों (Factory) उत्पादन (Production) बढ़ेगा।

Scanned with CamScanner

उपर्युक्त तथ्यों से यह स्पष्ट है कि सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था के कार्यकरण का उचित ज्ञान प्राप्त करने के लिए विभिन्न व्यक्तिगत इकाइयों तथा उनके पारस्परिक सम्बन्धों पर ध्यान देना अति आवश्यक है।

(B) सूक्ष्म आर्थिक विश्लेषण में व्यापक विश्लेषण की आवश्यकता निहित है।

जिस प्रकार व्यापक आर्थिक विश्लेषण में सूक्ष्म आर्थिक विश्लेषण की सहायता लेना आवश्यक है उसी प्रकार सूक्ष्म आर्थिक विश्लेषण में व्यापक आर्थिक विश्लेषण की सहायता लेना अनिवार्य है। इन दोनों के सम्बन्ध को हम निम्न बातों से स्पष्ट कर सकते हैं:-

(i) प्राय: एक व्यक्तिगत उत्पादक के सम्मुख हमेशा यह समस्या बनी रहती है कि वह उत्पत्ति के साधनों की मजदूरी का निर्धारण कैसे करे। सामान्यतया उत्पादक की इस समस्या का अध्ययन विशिष्ट या व्यापक अर्थशास्त्र के अन्तर्गत किया जाना चाहिए क्योंकि यह उसी के विषय क्षेत्र की बात है, परन्तु व्यवहार में ऐसा नहीं होता है क्योंकि उत्पादक अपने साधनों की मजदूरी का निर्धारण केवल अपने फर्म की सामर्थ्य के अनुसार नहीं कर सकता है। साधनों की मजदूरी का निर्धारण की समस्या का उत्तर विशिष्ट अर्थशास्त्र में नहीं मिल सकता है। इसके लिए हमें अन्य सम्बन्धित बातों का भी अध्ययन करना होगा जैसे किसी एक फर्म के साधनों की मजदूरी स्थानीय

फर्मों में दी जाने वाली मजदूरियों पर निर्भर करती है। किसी एक फर्म के श्रमिकों की मजदूरी पर केवल स्थानीय मजदूरों की मजदूरी की दर का ही प्रभाव नहीं पड़ता है बल्कि देश के अन्य भागों में दी जाने वाली मजदूरी तथा सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था में प्रचलित मजदूरी की सामान्य दर का भी प्रभाव पड़ता है।

(ii) कोई फर्म अपना कितना माल बेच पायेगी यह केवल उस फर्म के द्वारा उत्पादित वस्तु की कीमत पर ही निर्भर नहीं होगा बल्कि इस बात पर भी निर्भर होगा कि समाज में नागरिकों की क्रय शक्ति (Purchasing Power) कितनी है। मूल्य स्तर कितना भी नीचा क्यों न हो, यदि समाज की क्रय शक्ति बहुत कम है तो वस्तु की बिक्री अधिक नहीं होगी। इसके विपरीत वस्तु का मूल्य ऊँचा होने पर भी यदि समाज की क्रयशक्ति ऊँची है तो वस्तुओं की बिक्री अधिक होगी।

(iii) फर्म को अपने उत्पादन की मात्रा निश्चित करते समय समाज की सम्पूर्ण माँग, समाज की क्रय शक्ति, रोजगार स्तर तथा आय स्तर जैसी बातों को भी ध्यान में रखना होगा।

उपर्युक्त व्याख्या से यह स्पष्ट हो जाता है कि व्यापक एवं सूक्ष्म अर्थशास्त्र एक दूसरे के पूरक हैं।

Scanned with CamScanner

प्रो० गार्डनर (Prof Gardner) के इस कथन से भी यह स्पष्ट रूप सिद्ध हो जाता है। प्रो० गार्डनर का कथन इस प्रकार है— "व्यापक एवं सूक्ष्म अर्थशास्त्र के बीच विभाजन की कोई सुनिश्चित रेखा नहीं खींची जा सकती है। अर्थशास्त्र के विषय क्षेत्र के अन्तर्गत दोनों का ही समान स्थान है। सुविधा की दृष्टि से सही परिणामों पर पहुँचने के लिए व्यापक अर्थशास्त्र की समस्याओं का समाधान व्यापक अर्थशास्त्र के उपकरणों से एवं सूक्ष्म अर्थशास्त्र की समस्याओं का समाधान सूक्ष्म अर्थशास्त्र के उपकरणों से प्राप्त किया जाना चाहिए।"

अन्त में, हम यह कह सकते हैं कि सूक्ष्म तथा व्यापक अर्थशास्त्र में घनिष्ठ सम्बन्ध होते हुए भी दोनों में मूलभूत अन्तर भी है जिसे ध्यान में रखते हुए हमें इनका प्रयोग किया जाना चाहिए। तभी समस्याओं का सही हल निकाला जा सकता है।

Scanned with CamScanner